शर्की कालीन भू–राजस्व व्यवस्था

डॉ0 शैलेन्द्र कुमार

इतिहास विभाग,
गनपत सहाय पी0जी0 कॉलेज,
सुल्तानपुर

जौनपुर में शर्की राज्य की स्थापना मलिक सरवर द्वारा की गयी। धीरे–धीरे यह राज्य काफी मजबूत तथा दिल्ली सल्तनत की सीमाओं को संकुचित करते हुए अपने साम्राज्य विस्तार की नीति को कायम रखते गाजियाबाद, पटना, रीवा, हिमालय की तराई तथा आगरा की सीमा को पार कर गया। इस प्रकार एक विस्तृत भू–भाग पर शर्की सुल्तानों का अधिकार हो गया। भू–राजस्व की व्यवस्था किसानों के साथ अच्छा सम्बन्ध कृषि के क्षेत्र में प्रगति आदि पर विशेष वर्णन किया गया है। क्षेत्रीय इतिहास लेखन की दृष्टिकोण से यदि देखा जाय तो अब तक बहुत से इतिहास के विद्वानों के अलावा गैर इतिहासविदों ने भी जौनपुर के शर्की शासकों के सम्बन्ध में लिखने का प्रयास किया है। ऐतिहासिक परम्परा में समकालीन स्रोतों का पूरा अभाव है परन्तु आधुनिक युग में बहुत से विद्वानों ने पुस्तके लिखी, जिसमें मिया मुहम्मद सईद कृत शर्की डायनेस्टी, शेफाली बनर्जी कृत 'शर्की राजवंश का इतिहास', इकबाल अहमद कृत 'जौनपुर का इतिहास' तथा इसी क्षेत्र से जुड़ा हुआ प्रो0 एस0एन0 आर0 रिजवी 18वीं सदी पूर्वी उत्तर प्रदेश के जमींदार' डा0 महेन्द्र प्रताप सिंह 'किसान आन्दोलन' प्रो0 के0पी0 मिश्रा 'बनारस इन्ट्रानसन, प्रो0 जाफरी 'अवध' पर लिखकर इस क्षेत्री महत्व को आगे बढ़ाया।

शर्कीयों का 100 वर्षों का इतिहास बडा ही महत्वपूर्ण है। शर्की कालीन वास्तुकला की बराबरी शाहजहा के समय की वास्तुकला से की जाती है। शेरशाह तथा मुगल सम्राटों ने भी इनका अनुसरण किया है। जौनपुर को शिक्षा एवं राजनीति तथा सामाजिक एकता स्थापित करने का बेमिसाल उदाहरण है। जौनपुर को शिक्षा एवं राजनीति तथा सामाजिक एकता स्थापित करने का बेमिसाल उदाहरण दुनिया के सामने अपने को रखता है। ऐसी स्थिति में उदार शासक शर्की सुल्तानों ने अपने साम्राज्य के किसानों तथा भू–मालिकों से कैसा सम्बन्ध रखा, गाँव, नगर और ग्रामवासियों के साथ उनका सम्बन्ध अच्छा था या खराब तमाम पहलुओं पर इस लेख में ववर्ण किया गया है। शर्की कालीन साम्राज्य की अर्थव्यव्था के दो प्रमुख स्रोत थे– कृषि तथा लघुउद्योग। परन्तु इनमें कृषि क्षेत्र अधिक महत्वपूर्ण था। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार था। समाज के व्यवसायी वर्ग जैसे बुनकर, जुलोट, लुहार आदि आर्थिक आवश्यकताओं के लिए कृषि पर निर्भर रहते थे। 75 प्रतिशत से अधिक लोग गावों में रहते थे अप्रत्यक्ष तथा प्रत्यक्ष रूप से कृषि से जुड़े हुए थे। उपलब्ध भूमि कृषिकों के लिए काफी थी[1]। उस समय शर्की साम्राज्य मानव संसाधन एवं उत्पादों से भरपूर था[2]।

तत्कालीन साम्राज्य गावों तथा शहरों में विभक्त था। जो उपजाऊ जमीन, जानवरों के लिए चारागाहों, जलाऊ लकड़ी आदि के लिए जंगलों से आक्षादित था। गाँवों को आधिकारिक दस्तावेजों में मौजा के रूप में जाना जाता था[3]। भूमि पट्टे और गैर कृषि लोगों के बीच सम्बन्धों के आधार पर निम्नलिखित रूप से वर्गीकृत किया जा सकता है।

शर्कीयों का 100 वर्षों का इतिहास बडा ही महत्वपूर्ण है। शर्की कालीन वास्तुकला की बराबरी शाहजहा के समय की वास्तुकला से की जाती है। शेरशाह तथा मुगल सम्राटों ने भी इनका अनुसरण किया है।

शर्की कालीन साम्राज्य की अर्थव्यव्था के दो प्रमुख स्रोत थे– कृषि तथा लघुउद्योग। परन्तु इनमें कृषि क्षेत्र अधिक महत्वपूर्ण था। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार था।

असली गाँव
दाखिली गाँव
रैयती गाँव
तालुका गाँव

असली गाँव से तात्पर्य उस गाँव से था जो पूरी तरह बसा होता था। पुराना स्थापित गाँव असली गाँव के रूप में गिना जाता था[4]।

दाखिल गाँव का अर्थ का नये तौर पर विकसित गाँव अर्थात एक ऐसा गाँव जो पुराने गाँव को काटकर स्थापित किया गया हो और बड़े असली गाँव के साथ जुड़ा हो[5]।

रैयती गाँव अर्थात खालसा भूमि से सम्बन्धित गाँव, इन गावों पर भू–राजस्व निर्धारण और वसूली के मामले में राजय के विनिमय पूरी तरह से लागू किये जाते थे।

तालुका गाँव का अभिप्राय ऐसे गाँव समूह से था जो एक इक्तेदार के पास होते थे और इक्तेदार शासक को भू–राजस्व प्रदान करता था तथा प्रशासक के सहयोग से वे उस गाँव के मालिक होते थे। इसी तरह नये खरीदे गये गाँवों को तालुका गाँव कहते थे[6]।

शर्कीकालीन कृषि व्यवस्था का परीक्षण करने के सम्बन्ध में कई सम्बद्ध विषयों पर विचार करना नितान्त आवश्यक है। जैसा कि–

ग्रामीण आबादी
ग्राम्य शासन
कृषकों की कितनी श्रेणियाँ थी।
भूमि का वास्तविक स्वामी कौन था?

ग्रामीण आबादी में कृषक एवं गैर कृषक परिवार शामिल था। इन परिवारों में गाँव का चौकीदार, सीमापाल, पुरोहित, अध्यापक, ज्योतिषी, लुहार, बढ़ई, नाई, धोबी, ग्वाल, वैद्य, गायक चारण इत्यादि थे[7]। साधारणतया इन्हें, गाँ से उपज का एक भाग जीविकों पार्जन के लिए दिया जाता था[8]। प्रथम वर्ग में इक्तेदार, महाजन, गल्ले के व्यापारी शामिल थे। द्वितीय वर्ग में धनी, कृषक तथा तृतीय वर्ग में खेतिहर किसानों की संख्या सर्वाधिक थी[9] इसके अतिरिक्त किसानों की अन्य जातियाँ थी जिन्हें सही अर्थों में भूमिहीन मजदूर कहा जा सकता है। दलित जाति के सदस्य यह कार्य करते थे जो व्यवसायिक कास्तकारों द्वारा अस्पृश्य माने जाते थे। वस्तुतः दलित वर्ग के लोग प्रथम श्रेणी के किसानों के खेतों में मजदूरी पर कार्य करते थे[10]।ये ही वर्ग

धान की कटाई तथा चावल की कुटाई का भी काम करता था[11]। फिर भी भाईचारे का सम्बन्ध रहता था[12]।

गाँव के लेखाकार को कौटिलय के अर्थशास्त्र में गोप कहा गया है। सल्तनतकाल में उसे पटवारी कहा गया है। उसे गाँव के किसानों की भूमि तथा राजस्व का हिसाब किताब रखना पड़ता था। जियाउद्दीन बरनी लिखता है कि "यदि किसी भी पटवारी को कही से एक जितल भी उसके जिम्मे निकलता था तो उसे कठोर दण्ड दिया जाता था। उसे बन्दी गृह मे डाल दिया जाता था।[13]

शर्की कालीन साम्राज्य के गावों में सबसे प्रमुख अधिकारी चौधरी (मुकद्दम) कहलाता था। यह पद वंशानुगत हो गया था। इस पद का क्रय–विक्रय भी होता था इब्राहीम शाह के समय में एक चौधरी के पद 120 रूपये में खरीदने का प्रमाण मिलता है जब कि अकबर के समय एक मुकद्दम का पद खरीदने मे 230 रुपया देना पड़ता था। चौधरी गाँव का निवासी होता था पर कभी–कभी गाँव के बाहर का व्यक्ति भी पद प्राप्त कर लेता था यदि चौधरी अपना काम ठीक से नहीं करता तो महकमा माल के सरकारी अधिकारी पर मुक्त कर देते थे[14]।

चौधरी ही भू–राजस्व की वसूली करता था। किसानों के व्यक्तिगत लगान, लेनदेन का हिसाब किताब रखना उसका परम कर्तव्य था[15]। उसके कागजात को वही या कच्चा चिठ्ठा कहते थे। (कागजात–ऐ–खास) वेतन के रूप में उसे फसलाना–खुराकी, वसूल किये गये लगान का एक प्रतिशत दस्तूरी मिलती थीं[16]।

गाँव में प्रत्येक विरादरी की पंचायत होती थी जिसके सदस्य परिवारों के मुख्या होते थे। पंचायत का अध्यक्ष सरपंच कहलाता था। साधारण मुकदमें यही तय हो जाते थे। ऐसे भी गाँव थे जहाँ गाँव की समस्त आय एकत्रित की जाती थी। इसमें से माल गुजारी दी जाती थी तथा इसके अतिरिक्त पटवारी, कानूनगो, चौकीदार की दस्तूरी, चौधरी के सत्कार का खर्चा, भिखारियों को दिये जाने वाले दान, नट और बाजीगरों के प्रदर्शन का खर्च, नालों के पाटने का काम भी किया जाता था[18]।

शर्की कालीन कृषि व्यवस्था मूल रूप से किसानों पर आधारित थी। खेती करने वालों के लिए रियाया और मुजारियों जैसे शब्दों का प्रयोग मिलता है। कभी–कभी अकेले रियाया शब्द का ही प्रयोग मिलता है। रियाया अथवा कृषक की कई श्रेणिया होती थी।

खुद काश्त
पाही काश्त
मुजारियान

यद्यपि यह आवश्यक नहीं था कि तीनों श्रेणियों के किसान एक ही गॉव में निवास करते हो।

(खुद काश्त वे किसान होते थे जो एक गॉव में निवास करते थे। जो बैलों द्वारा खेती करते थे। वे अपनी जमीन के मालिक होते थे। ये पुरानी दर पर ही राजस्व देते थे। जो प्राचीन काल से चली आ रही थी। पटवारी तथा मुकद्दम इसी वर्ग के होते थे।)

पाही काश्त या पही उस किसान को कहते थे जो पड़ोस के गॉव से या दूसरे की जिम्मेदारी पर कृषि करने आता था। यह शर्की सुल्तानों ने इस नये वर्ग को जन्म दिया। यही अकबर के शासन काल में पाये जाते है। इब्राहीम शाह शर्की ने यह आदेश दिया कि यदि किसी कृषक के पास खेती करने योग्य भूमि नहीं है तो उसे दूसरे गॉव में खेती करने की महैया करायी जाय। जब वे अपने गॉव में खेती करते तो खुद काश्त दूसरे गॉव में पाही काश्त, कृषक कहा जाता था। जब तक ये भू–राजस्व देते तब तक बेदखल नहीं किया जा सकता था। पाही काश्त अक्सर बटाईदार भी होते थे।[19]

कृषकों का तीसना वर्ग मुजारियान अथवा मौसमी अंश हिस्सेदारी कृषिकों का था। मुजारियान कृषक होते थे जिनके अधिकार में इतनी कम भूमि होती थी जिससे उनके परिवार का भोजन तथा अन्य खर्च वहन नही हो पाता था। अतः वे अपनी भूमि के अलावा खुदकाश्त किसानों से किराये पर जमीन लेकर उस पर भी खेती करते थे[20]।

शर्कीकाल में भूमि के राजस्वामित्व का सिद्वान्त उतना ही निराधार है जितना वह हिन्दू काल में था। एडवर्ड टामस के अनुसार "भूमि के राज्य स्वामित्व की कल्पना को आईन–ऐ–अकबरी से कोई समानता नहीं मिलता है। यह सच है कि विद्रोह करने वाले किसानों से कृषि भूमि छीन ली जाती थी तथा दूसरे किसानों को दे दिया जाता था। रैयात को अच्छा किसान को बनने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता था। शर्की सुल्तान साम्राज्य के किसानों का साझीदार मात्र था। भू–स्वामी की मृत्यु के पश्चात कृषि भूमि सुल्तान को वापस मिल जाती थी। उसके सन्तान को भूमि मिले या न मिले क्यों कि सुल्तान का उस पर निरंकुश अधिकार था। जब कि मुगलकाल में वंशानुगत चलता रहा।

क्र.	क्षेत्र का नाम	कृषि योग्य भूमि बीघा में	भू–राजस्व धनराशि
1	अवध	2796206	2035106.00
2	आगरा	3000000	24861889.00
3	गोरखपुर	244283	152530.00
4	बहराइच	1823435	1218109.00
5	इलाहाबाद	18431121	1336309.00
6	जौनपुर	863298	16987.00
7	बिहार (पटना तक)	10361335	12463.00
8	रीवा, शंकरगढ़	942216	8696.00

उपरोक्त तालिका में अवध, आगरा, गोरखपुर, बहराईच, इलाहाबाद, जौनपुर, बिहार, रीवा, शंकरगढ़ आदि स्थानों से प्राप्त भू–राजस्व शर्की सुल्तानों की आय का एक प्रमुख स्रोत था जिससे सेना, भवन तथा जन कल्याणकारी योजनाओं को सुचारू रूप से संचालन करते थे।

गेहूं, जौ, गन्ना, चावल, सूत नील का उत्पादन होता था। भूमि को अधिकाधिक उपजाऊ बनाने के लिए गोबर की खाद आदि का प्रयोग करते थे। सिंचित असिचित भूमि पर खेती होती थी। खेती करने के लिए खुरपी, फावड़ा, कुदाल, सिचाई के लिए मोट, रहट, का उपयोग करते

थे। फसल चक्रानुसार बोने की प्रथा थी। शर्की साम्राज्य में इस प्रकार की फसले पैदा की जाती थी जिसमें 21 रबी की तथा 29 खरीफ की प्रमुख थी। नगदी फसलें भी होती थी नील, कपास, गन्ना, पोस्ता आदि।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. जौनपुर नामा, मौलवी खैरूद्दीन, ब्रिटिश म्यूजियम माईक्रो फिल्मापी कलकत्ता।
2. सलातीने जौनपुर, मुहम्मद, गौस अली, जौनपुर, पृ0 180।
3. सुबहे सादिक, मुहम्मद सादिक, बिनमुहम्मद सालेह जिल्द 26, पृ0 12।
4. शर्की सुल्तानों का इतिहास, शेफाली बनर्जी, पृ0 182।
5. वही, पृ0 186।
6. तुजुक–ऐ–बाबरी, बाबर (अंग्रेजी अनुवाद) बेबरीज, पृ0 216।
7. ड्रिस्किटिव नोट्स आन द शर्की मोनार्की आफ जौनपुर। सैयद हसन अस्करी, इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस प्रोसीडिग्स (1960)
8. फरिश्ता। भाग– 2, पृ0 305
9. मिरातुल इसरार। फो0 504, पृ0 113।
10. डि0 गजेटियर ऑफ जौनपुर। पृ0 173।
11. सी0जे0 ब्राउन। द क्वायनेज आफ इण्डिया। पृ0 85।
12. तजलिलए नूर, भाग–1 पृ0 8।
13. इस्लामिक कल्चर हैदराबाद, पृ0 2018–225।
14. मिडिवल इण्डियन कल्चर, पृ0 233।
15. कीर्तिलता, विद्यापति पृ0 42।
16. वही पृ0 44।
17. वही पृ0 90।
18. इन्फलुएंस ऑफ इस्लाम आन इण्डियन कल्चर, ताराचन्द पृ0 132।
19. गिल्मसेज ऑफ मिडिवल इण्डियन कल्चन, यूसुफ हुसैन, पृ0 14।
20. इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस प्रोसीडिग्स पटना पृ0 270।
21. आईन–ए–अकबरी, अबुलफजल (अंग्रेजी अनुवाद), मुगल इकानामी प्रो0 सीरीन मूसवी के द्वारा लिखित पुस्तक के आधार पर तैयार किया गया।
22. जगदीश नारायण सरकार, मुगल इकानामी, पृ0 316